सम्पादकीय

परम् सम्मानीय साथियों, अजीज मित्रों एवं प्रिय शोधार्थियों !

छठे अंक को आपके करकमलों में अर्पित करते हुए प्रशन्नता एवं आनन्द की तीव्र अनुभूति हो रही है।

''मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर लोग साथ आते गये और कारवाँ बनता गया।'' इस शोध पत्रिका के कुटुम्ब में उतरोत्तर बढ़ोतरी हो रही है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, अरुणाचल के कच्छ रण तक ही नहीं अपितु विदेशी शोधार्थियों का रुझान भी इस शोध पत्रिका के प्रति निरन्तर बढ़ रहा है।

इस उन्नति, विकास एवं प्रशन्नता का समस्त श्रेय आप सभी को है। मैं हृदय से आपका आभार व्यक्त करता हूँ।

पुनश्चः, शोध पत्र की गुणवत्ता का प्रतिबिम्ब शोधार्थी एवं शोध पत्रिका पर प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होता है। आपकी मेधा एवं शोध पत्रिका की गुणवत्ता का मापदण्ड आपके द्वारा रचित शोधपत्र है। सम्पादकीय मण्डल, परामर्शमण्डल एवं विषय विशेषज्ञों के निर्णयानुसार आपके शोधपत्र में निम्न बिन्दुओं पर कार्य होना अपेक्षित है-शोध पत्र का नाम सटीक हो, शोध पत्र का विषय, उद्देश्य, कार्य, महत्त्व, निर्णय, परिणाम एवं सुझाव आदि से परिपूर्ण हों। शोध पत्र में फुटनोट व सन्दर्भ ग्रन्थ का विवरण अनिवार्य रूप से किया गया हो। अर्थात् शोधपत्र की रचना शोध प्रविधि (Research Mathology) के मापदण्डानुसार होनी चाहिए। शोध पत्र में एक से अधिक लेखकों के नाम से तब तक बचना चाहिए जब तक आपका शोध पत्र आँकड़ों, सांख्यिकी, रिपोर्ट, फील्डवर्क या प्रायोगिक रूप पर आधारित न हो अन्यथा शोध पत्र के अपेक्षित लाभ से वंचित हो सकते हैं। उक्त शोध पत्रिका आपको आपके शोधपत्र के विषय में संकेत करती आ रही है। निवेदन का उद्देश्य यही है कि हमें आर्टीकल व शोध पत्र के रूप, स्वभाव प्रकृति व वर्ग से परिचित होना होगा। शोध पत्र के विषय में UGC के सख्त नियम आ चुके हैं।

कृपया इस शोध पत्रिका में आर्टीकल, निबन्ध अथवा लेख आदि न भेजें- केवल गुणवत्ता से परिपूर्ण शोधपत्र भेजें, अन्यथा शोधपत्रों से इतर रचनाओं का प्रकाशन सम्भव नहीं होगा। यह शुद्ध रूप से शोध पत्रिका है कृपया शोध पत्र ही प्रेषित करें।

दूसरा, शोधपत्र के प्रकाशन हेतु वार्षिक या आजीवन सदस्य होना प्रथम एवं अनिवार्य शर्त है। अतः इस सम्बन्ध में आप सहृदयता का परिचय देते हुए शोध पत्रिका का सहयोग करें। भविष्य में इस बिन्दू का सख्ती से पालन किया जायेगा अन्यथा पत्रिका का आर्थिक चक्रव्यूह से बाहर निकल पाना संभव न होगा।

समस्त प्राचार्य महोदय, विभागाध्यक्ष महोदय, पुस्तकालयाध्यक्ष महोदय से अनुरोध है कि उक्त शोध पत्रिका की सदस्यता, अपने विश्वविद्यालय, कॉलेज या विभाग के पुस्तकालय हेतु संस्तुति करने की कृपा करें-आपकी अति कृपा होगी।

विशेष अनुरोध-शोध पत्रिका के विषय में खुलकर अपने विचार व्यक्त करें। आपके पत्रों का स्वागत है। शोध पत्रिका की गुणवत्ता हेतु आपके अमूल्य विचारों की प्रतीक्षा है। आप अपने प्यार, स्नेह, आशिर्वाद को इसी भाँति बनाये रखें। मेरा निरन्तर मार्ग निर्देशन करते हुए मेरे हौसलों में अपनी साँसे फूँकते हुए परवाज हेतु प्रेरित करते रहें। आप ही मेरा सम्बल व शक्ति हैं।

आप सभी का जीवन इन्द्रधनुषी सफलताओं से ओत-प्रोत हो जाये, तकदीर की माँग में सफलता के असंख्य सितारे भर जायें, खुशियों से आपका दामन, आपकी झोली लबालब हो जाये। इसी दुआ के साथ जुलाई के अन्तिम सप्ताह में पुनः मिलने की आशा के साथ विदाई लेता हूँ- जय हिन्द-जय भारत।

आपका

डॉ. कृष्ण बीर सिंह